चहल पहल
मार्च 2021 वर्ष 1 अंक 7

चहलपहल

अजित फाउण्डेशन द्वारा प्रकाशित
संपादक : संजय श्रीमाली
मार्च : 2021

इस अंक में......

संपादकीय

कितना कुछ सीखातें हैं – त्योंहार

कविताएं

होली	सुनील गज्जाणी	4
रंगों की होली	गोविन्द भारद्वाज	4
पिचकारी	हर प्रसाद रोशन	4
शिक्षा का उजिलाया	गौरीशंकर वैश्य	5
गुलाब	प्रिया देवांगन	5
नाम है आलू	बद्री प्रसाद वर्मा	11
होली का त्योंहार	डॉ. बसन्ती हर्ष	12
मिलकर होली खेलेंगे	डॉ. कृष्णा आचार्य	12
खेलने आऐ होली	महेन्द्र कुमार वर्मा	12
मेढ़क	दीनदयाल शर्मा	17

कहानियां

इस बार होली में	टीकेश्वर सिन्हा	6
मेनलो पार्क का जादू	प्रमोद कुमार चमोली	8
चुनमुन डॉल्फिन	डॉ. राकेश चक्र	10
तुम बेमिसाल हो	पूनम पांडे	16
जंगल में धरना	शुभम पांडेय	18

विविध

अंगारे जैसे फूलों वाला	शिवचरण चौहान	20
बाल पहेलियां	डॉ. कमलेंद्र कुमार	21
व्यंग्य चित्र	चाँद मोहम्मद गोसी	22
क्या करें ? क्या....	संजय पुरोहित	23
वेब दुनिया	सुरेश कुमार पुरोहित	24
एस्ट्रोनॉमी क्लब	संजय श्रीमाली	25
कार्टुन कोना	मस्तान सिंह	26

नन्ही कलम

पेज 13 से 15– चारू शाणसूखा, काव्या दवे, नारायणी जाट, कुनिका कौशिक, महिमा जैन, राशि दवे, पूर्णिमा बूचा, दिव्यांशू पडिहार, कार्तिक जैन, ख्याति बक्शी, तनिया कौशिक

मुख्य आवरण एवं कहानियों में चित्रांकन चित्रकार राम भादाणी द्वारा किए गए है।

आप अपनी रचनाएं इस ईमेल पते पर भेजे
chahalpahalnew@gmail.com

कितना कुछ सीखातें हैं - त्योंहार

प्यारें बच्चों आपका सबसे प्रिय त्योंहार इसी महीने में आना वाला है। हां, मैं बात कर रहा हूँ 'होली' की। मौज–मस्ती का त्योंहार। प्रकृति के सभी रंगों को आत्मसात करने का त्योंहार। रंग–तरंग। मेल–मिलाप। बहुत ही अनूठा त्योंहार है, होली। भिन्न–भिन्न रंगों में रंगतें हुए एक रंग हो जाने का त्योंहार है, होली। बच्चें अपनी–अपनी टोलियों में आपस–में तथा अपने मित्रों को रंग एवं गुलाल लगाते है। सब कुछ आपस में घुल–मिल जाता है।

हमारे यह त्योंहार हमें दुखःद अहसासों को भूलने तथा नये की ओर बढ़ने का अवसर एवं सन्देश देते हैं। जब हम होली खेलते हैं तब हम सामाजिक भेदभाव को भूल जाते हैं। रंग तो लगाना एक बहाना है। इस रंग के साथ हम एक–दूसरे को गले लगाते है। ईर्ष्या, द्वेष आपसी कलह आदि भूलकर उसको नया रंग देते हैं। अमीर–गरीब की दीवार तोड़ते हैं। जाति–पाति की खाई को पाटते हैं। कितना कुछ सीखाते हैं, हमें यह त्योंहार। कितने अवसर देते है कि हम मानवीय गुणों को विकसित करें। चाहें किसी भी वर्ग या समुदाय का त्योंहार हो वह हमें आपसी प्रेम, साम्प्रदायिक समरसता एवं मानवीय गुणों की तरफ ही ये जाता है।

होली भी एक ऐसा ही त्योंहार है जिसमें सामाजिक समरसता, सदभाव एवं आपसी प्रेम है। लेकिन कुछ असामाजिक तत्व होली जैसे पवित्र त्योंहार पर फुहड़ता एवं हुड़दंगबाजी करते दिखाई देते है। रासायनिक रंगों का इस्तेमाल करते है, अश्लील एवं भद्दे गाने डीजे पर बजाते है तथा भयंकर नशा करते है। हमें इनसे बचना होगा। केमिकल युक्त रंग से त्वचा खराब हो जाती है। नशे से दूर रहना होगा क्योंकि इससे हमारा स्वास्थ्य खराब हो जाता है। तथा हुड़दंग से हमारी नैतिकता पर चोट पहुंचती है। त्योंहार तो एक दिन में चला जाएगा लेकिन हमारे व्यक्तित्व पर दाग लगा देगा। इसलिए हंसी–खुशी, मौज–मस्ती करते हुए होली का आनन्द लेवें। अपना एवं अपने परिवार का ध्यान रखे।

आप सभी को होली की शुभकामनाएं !

संजय श्रीमाली

कविताएं

होली

चुन्नू–मुन्नू पिचकारी थामे
सोन्टू, पिंटू के पीछे भागे
होली है भई होली है भई
पिचकारी उन पे दागे !

अबीर–गुलाल उड़ाते बच्चे
मस्ती में खेले होली बच्चे
रंग–रंगीले छैल–छबीले
पानी से खूब खेले बच्चे !

सुनील गज्जाणी
सुथारों की बड़ी गुवाड़, बीकानेर

रंगों की होली

गली–गली में छाई,
फिर रंगों की होली।
दौड़–दौड़ के आई,
हुड़दंगों की टोली।

कोई हुआ गुलाबी,
हुआ कोई है लाल।
सबके हाथों में हैं,
रंग बिरंगा गुलाल।

ढोल बजाता कोई,
कोई बजाए चंग।
नीले नभ में बिखरा,
इन्द्रधनूषी रंग।

हाथ लिए पिचकारी,
मारे खूब बौछार।
होली है.. होली है..,
सब कहे यही पुकार।

फागुन की मस्ती में,
मचा रहे सभी धूम।
रंगों की बरखा में,
झूम रहे सभी झूम।

जात–धर्म भेद नहीं,
एक रंग हैं सब के।
हिन्दू–मुस्लिम दोनों,
हर मजहब हैं रब के।

भूल गये सभी आज,
कुछ गंदों की बोली।
गली–गली में आई,
हुड़दंगों की टोली।

गोविन्द भारद्वाज
पंचशील नगर अजमेर

पिचकारी

होली पर पिचकारी आती
बच्चों का उत्साह बढ़ाती।
रंग बिरंगे रंग लुटाती
प्रेम, प्यार के गीत सुनाती।
रंगों के संग डूब जाती
सबको यह हुलियार बनाती।
रंग हजारों लेकर आती
लोगों के मुखड़े रंगाती।
वैर, बुराई सभी मिटाती
होली की हिरोइन कहाती।

हर प्रसाद रोशन
गांधी नगर, हल्द्वानी,
नैनीताल। उत्तराखंड

शिक्षा का उजियाला

आओ! चलें पाठशाला

खेल–खेल में सीखेंगे हम
सौ तक गिनती, जोड़, घटाना
हाथों में पुस्तक जब होगी
नहीं पड़ेगा मुँह लटकाना

साफ–साफ लिखकर कॉपी पर
कर लें याद वर्णमाला।

विद्या की देवी खुश होती
श्रम से पढ़ने–लिखने से
सभ्य नागरिक कहलायेंगे
ज्ञान, बुद्धि, बल रखने से

ए बी सी डी, क ख ग घ
खोले किस्मत का ताला

तन–मन का विकास जब होगा
सामाजिक सम्मान बढ़ेगा
पूरा हो भारत का सपना
बच्चा–बच्चा खूब पढ़ेगा

उजला तभी भविष्य दिखेगा
फैले शिक्षा का उजियाला
आओ! चलें पाठशाला

गौरीशंकर वैश्य विनम्र
117 आदिलनगर, लखनऊ

गुलाब

डाल–डाल पर लगी हुई थी।
सुंदर सी गुलाब की कली।।
खुशबू चारों ओर बिखेरती।
गुलाब की नन्ही सी कली।।

तितली उसके पास है आती।
नन्ही कली पर बैठ जाती।।
रस उसका संग लेकर।
पेट अपना भरती।।

फूलों पर बैठ तितली।
मन की बात बताती।।
नन्ही कली को दोस्त बना के।
आसमान में उड़ जाती।।

प्रिया देवांगन 'प्रियू'
पंडरिया
जिला–कबीरधाम

कहानी

इस बार होली में

टीकेश्वर सिन्हा

कल होली थी। पूरी तैयारी हो चुकी थी। नरेश वर्मा जी बच्चों के लिए रंग–गुलाल ले आये थे। दो पिचकारी भी, वो भी बहुत सुंदर। पॉलीथिन का कवर लगा हुआ था। शिखा पिचकारी पाकर बहुत खुश थी। आलमारी के ऊपर रखे पिचकारी को हाथ से पकड़ कर देखती, फिर रखती। कहीं से आती, एक नजर जरूर डालती अपनी प्यारी पिचकारी पर। उसे होली का बेसब्री इंतजार जो था। लेकिन शिखर पिचकारी पाकर अनमना सा था। उसे बोतलनुमा पिच–पिच करने वाली पिचकारी बिल्कुल पसंद नहीं थी। मम्मी मधुर वर्मा जी को इसके बारे में पता चल चुका था। पापा को बताने की हिम्मत नहीं हुई। उसे सूझा, क्यों न मैं खुद बाँस की पिचकारी बना लूँ। और भिड़ ही गया एक बाँस के टुकड़े को पिचकारी रूप देने में।

मम्मी... मम्मी... मैं नहा लेती हूँ, नल आ गया है। फिर आपको हेल्प करूँगी काम करने में। मेरे बाद आप नहा लेंगी, कहते हुए शिखा बाथरूम में गयी। बड़े मजे से नहा रही थी। कुछ गुनगुना भी रही थी। तभी अचानक नल से पानी निकलना कम होने लगा। शिखा टोंटी में उंगलियों से हरकत करने लगी।

धार जस की तस। उसे लगा कि शायद नल बंद हो गया होगा। मम्मी को आवाज लगाई। मम्मी आई। उसने देखा कि धार कम हो गयी है। समझ नहीं पा रही थी कि इतनी जल्दी नल कैसे बंद हो गया। टोंटी में उंगली डालकर देखा, तो कुछ फँसा हुआ है। फिर उल्टे चम्मच को टोंटी में डालती गयी। बहुत प्रयास के बाद सफलता हाथ लगी। यानी पॉलीथिन के कुछ टुकड़े बाहर निकले। दोनों माँ–बेटी एक–दूसरे को देख मुस्कुरा दिये।

अब शिखर की पिचकारी भी बनकर तैयार हो गयी। उसे एक जगह सुरक्षित रख दिया। शिखर को भूख भी लगी थी। बोला– मम्मी, कुछ खाने के लिए है क्या, है तो दो ना...बहुत भूख लगी है। मधुर किचन में बिजी थी। बोली– थोड़ा रूको। सब्जी बन रही है, फिर दूँगी।

नहीं मम्मी, कुछ सुखा आयटम होगा तो दो ना। प्लीज मम्मी। बड़ी जोर से भूख लगी है। शिखर की अनुरोध में जिद थी।

अच्छा बाबा, जा बेडरूम के सेकंड रैक में केले हैं, शायद चीकू भी है, खा ले। मधुर वर्मा की किचन से व्यस्तता भरी आवाज निकली।

फिर शिखर ने पॉलीथिन के कैरी बैग में रखे केले को देखा। केले खराब हो गये थे। ध्यान गया चीकू पर, वो भी खराब। मधुर वर्मा ने आकर देखा– अरे, ये तो सड़ गये हैं। तुम्हारे पापा जी तो लाये हैं पॉलीथिन में और लाने के बाद इन्हें निकाल कर अलग से नहीं रखा। पॉलीथिन के कारण पूरे फल खराब हो गये। चल खाना देती हूँ। खाना, फिर खेलना। शिखर भी मान गया।

दूसरे दिन होली आई। सुबह से ही पूरे क्रिश्चियन कॉलोनी में चहल–पहल थी। सर्वत्र खुशियाँ ही खुशियाँ। छोटे–बड़े सब में हर्ष–उमंग। बड़ा खुशनुमा माहौल। नगाड़े की धून हवा की तरंगों में समाहित थी। शिखर तो आज सादे पानी से ही अपनी पिचकारी का ट्रायल कर चुका था। एक सुंदर व सफल पिचकारी पाकर अब उसके हाथ में थी। प्रसन्नता की लकीरें उसके माथे पर स्पष्ट झलक रही थी। तभी उसे लगा कि दरवाजे पर कोई आये हैं। जाकर देखा– अब्दुल कासिम जी और उनके बेटे राशिद। नमस्ते किया। अब्दुल कासिम नरेश वर्मा जी के स्टाफमेट थे। बॉटनी सब्जेक्ट का व्याख्याता पंचायत थे। नरेश वर्मा जी लेंग्वेज के टीचर। दोनों में अच्छी फ्रेंडशिप थी। राशिद शिखा के साथ पढ़ता था। दोनों अंदर आये। कासिम जी नरेश वर्मा को देखते ही बोले– नरेश भाईजान ! होली मुबारक हो। दोनों एक–दूसरे के माथे पर गुलाल मलते हुए हाथ मिलाये और गले लग गये।

सभी ड्राइंगरूम में बैठे। बधाइयाँ हुई। नाश्ता–पानी हुआ। हँसी–मजाक हुआ। इधर–उधर की बातें हुई। तभी अचानक कासिम के लिये कागज में रखा गुलाल टी–टेबल पर बिखर गया। राशिद गुलाल उठाते हुए बोला– इसीलिए मैं पॉलीथिन पैकेट में रख रहा था पापा जी। आपने मना कर दिया। पॉलीथिन में होता तो नहीं गिरता। कासिम जी बोले– पॉलीथिन के उपयोग पर हमारी सरकार ने बैन लगा दी है, जो पर्यावरण सुरक्षा की दृष्टि से बिल्कुल सही है। तभी नरेश वर्मा जी के मन में एक प्रश्न उठा– यार कासिम भाई, पॉलीथिन से आखिर गॉरमेंट को इतनी एलर्जी क्यों है ? उसके बगैर तो रूटीन वर्क पॉसिबल ही नहीं है भाई। कुछ भी रख लो, कहीं भी ले जाओ, बड़े काम की चीज है। पॉलीथिन।

नरेश भाई, ये पॉलीथिन ऐसा केमिकल प्रोडक्ट है जो पुराने होने या फटने पर भी न तो सड़ता–गलता है और न ही जलाने पर जलता है, कासिम ने बीच में ही जवाब रखा, कचरे के रूप में फेंकने पर इसका ढेर लग जाता है। इसमें फँसे खाद्य पदार्थों से असहनीय दुर्गंध निकलती है जो हमारे वायुमंडल के लिए नुकसानदेह है। चारा ढूँढ़ते हमारे गाय बैल, भैंस इसे खा लेते हैं जिससे इनकी जान जोखिम में पड़ जाती है। पॉलीथिन पड़ी जगह पर घास तक नहीं उगती। जमीन बंजर पड़ जाती है। इससे पर्यावरण प्रदूषित होता है।

हाँ...हाँ....अंकल, आप सही कह रहे हैं। बहुत ही बेकार चीज है ये पॉलीथिन, शिखा नल में पॉलीथिन फँसने और चीकू–केले के सड़ने वाली बात धारा प्रवाह बता डाली। अब शिखर से भी नहीं रहा गया– और न अंकल ! कल एक लड़की बंछोर प्रोविजन स्टोर्स से तेल खरीद कर ले जा रही थी। तेल पॉलीथिन के पैकेट में रखा था। पता नहीं पैकेट का मुँह ठीक से बंधा था कि नहीं, सब तेल जमीन पर गिर गया। वो बेचारी रोने लग गयी। अचानक नरेश वर्मा जी को याद आया– और हाँ यार कासिम भाई, लेबर कॉलोनी में इसी बरसात नालियों में पॉलीथिन फँसने से पानी सड़कों पर आ गये। पॉलीथिन का यूज नहीं, बल्कि मिसयूज हो जाता है। इस तरह आज पॉलीथिन पर ही बात चली। सभी ने पॉलीथिन का उपयोग न करने पर जोर दिया। इस बार पॉलीथिन का उपयोग नहीं करते हुए पर्यावरण को बचाना होली का शुभसंदेश रहा और बहुत सारी बातें हुईं। अब समय भी हो गया। कासिम और राशिद ने विदा ली। शिखा और शिखर रंगों में रम गये।

घोटिया–बालोद (छ.ग.)

आविष्कार की कहानी

मेनलो पार्क का जादू

प्रमोद कुमार चमोली

यदि कोई आपसे पूछे कि आपको कोई वस्तु दिखाई क्यों देती है ? इसका सीधा सा जबाब आप देंगे कि हमारी आँखे इसलिए हमें कोई भी वस्तु दिखाई देती है। लेकिन यदि प्रश्न यह हो कि आपको अंधेरे कमरे में आँख खुली होने के बाद भी आपको दिखाई देता है ? यानी की आँख देखने का उपकरण है लेकिन दिखाई देने के लिए सबसे जरूरी चीज है वह है प्रकाश। कोई भी वस्तु हमें इसलिए दिखाई देती है कि उस वस्तु से प्रकाश हमारी आंखों में आता है इस कारण हमें वस्तुएँ दिखाई देती हैं। इसी कारण हमें अंधेरे में दिखाई नहीं देता।

पुराने समय में रात्रि में घनघोर अंधकार हो जाता था। सारे काम रूक जाया करते थे। धीरे–धीरे आदमी ने आग से रोशनी करनी सीखी। लंबे समय तक हम मशालों, चिमनियों और लालटेनों का उपयोग किया जाता था। सड़को पर लगी रोडलाईट के स्थान चिमनियों के लैम्पपोस्ट हुआ करते थे। इनमें बत्तिया और ईंधन तेल के उपयोग से रोशनी की जाती थी। समस्या यह थी कि इनका ज्यादा समय तक उपयोग नहीं कि जा सकती थी और इनका रखरखाव भी करना पड़ता था। ऐसे में विद्युत रोशनी के लिए ऐसे उपकरण की जरूरत थी जिससे हमें सूर्य के छिपने के बाद भी रोशनी मिल सके।

अंधेरे में रोशनी की यह खोज इलेक्ट्रिक बल्ब की खोज से पूरी बल्ब की खोज ने मानव जीवन को हमेशा के लिए बदल कर रख दिया। परन्तु क्या आपको मालूम है अंधेरे को दूर करने वाले इस महत्वपूर्ण उपकरण का आविष्कार किसने, कब और कैसे किया था ? इस खोज के लिए प्रयास अनेक वैज्ञानिकों ने किया लेकिन पूर्ण रूप से सफलता सन् 1879 में अमेरिकी वैज्ञानिक एवं व्यवसायी थॉमस ऐल्वा एडिसन को मिली। हालांकि कुछ लोगों का मानना है कि एडिसन से पहले दूसरे वैज्ञानिकों ने बल्ब की खोज कर दी थी।

एडिसन को विश्व का पहला बिजली का बल्ब बनाने में डेढ़ साल का वक्त लग गया था।
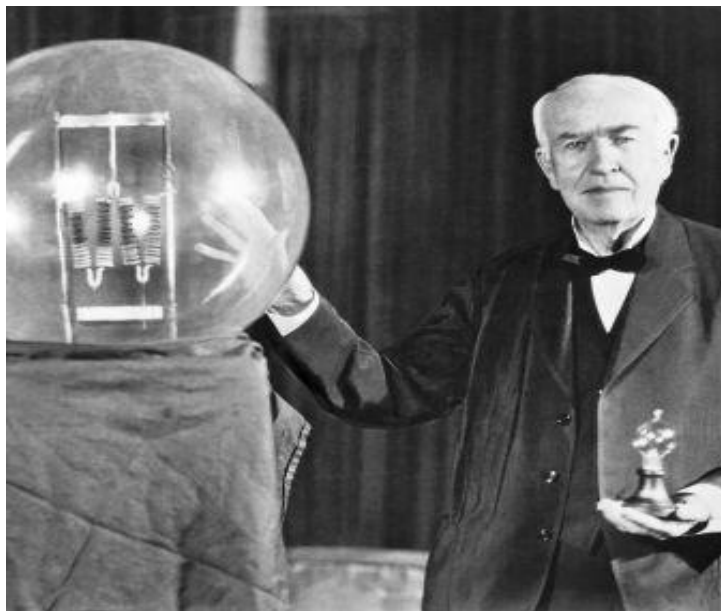
बिजली के बल्ब के आविष्कार बहुत आसानी से नहीं हो गया था। एडिसन ने इसके लिए कड़ी मेहनत करनी की। वे बल्ब बनाने में हजार बार से अधिक बार असफल हुए लेकिन उन्होंने अपना धैर्य नहीं खोया। एक वैज्ञानिक धैर्य होना जरूरी होता है। सोचिए यदि वे लगातार प्रयासरत नहीं रहते तो बिजली के बल्ब का आविष्कार शायद वे नहीं कर पाते। अपने हजार से अधिक बार असफल होने पर उन्होंने कहा था कि ''मैं कभी नाकाम नहीं हुआ बल्कि मैंने हजार से अधिक ऐसे रास्ते निकाले लिए जो मेरे काम नहीं आ सके।'' पहला बल्ब 13 घंटे से ज्यादा समय तक जला था। इसके फिलामेंट को कार्बनीकृत धागे से बनाया गया था। 31 दिसंबर, 1879 को मेनलो पार्क में स्थित प्रयोगशाला के काम्प्लेक्स को एडिसन द्वारा बनाए गए बिजली के बल्बों से रौशन किया गया था। जिसे पहली बार देखने के लिए हजारों कि संख्या में लोग इक्ट्ठे हुए थे।

एडिसन का बल्ब वास्तव में गरम होने के कारण प्रकाश का उत्सर्जन, तापदीप्ति (incandescence) ही था। बाद में धीरे–धीरे इस बल्ब में बहुत से परिवर्तन हुए। आज जो बल्ब हमें दिखाई देता है इसमें एक पतला फिलामेन्ट (तार) होता है जिससे होकर जब धारा बहती है तब यह गरम होकर प्रकाश देने लगता है। फिलामेन्ट को काँच के बल्ब के अन्दर इसलिये रखा जाता है ताकि अति तप्त फिलामेन्ट तक वायुमण्डलीय आक्सीजन न पहुँच पाये और इस तरह क्रिया करके फिलामेन्ट को कमजोर न कर सके। खैर, एडिसन का यह बल्ब आने वाले समय में बीती हुई बात हो जाएगा। रौशनी के लिए तरह–तरह के कम ऊर्जा खर्च करने वाले एलईडी बल्ब आज चलन में है। आज का बल्ब भले ही एडिसन वाला बल्ब तो नहीं है पर इतना जरूर कहा जा सकता है। आज मनुश्य ने अंधेरे पर जो विजय प्राप्त कर चुका है। रात्रि को भी सड़के, इमारतें, बाजार, दुकाने, ऑफिस इत्यादि जगमगाते रहते हैं। ये सब एडीसन की इस महानतम खोज का परिणाम है। बल्ब की महान खोज करने वाले

थामस अल्वा एडीसन का जन्म 11 फरवरी, 1847 में मिलान (ओहायो, अमेरिका) में हुआ था। एडिसन की श्रवण शक्ति बहुत कमजोर होने के कारण वे अपने शिक्षक की बातें बमुश्किल समझ पाते थे, इसलिए उनकी माँ ने उन्हें घर पर ही शिक्षा दी। एडिसन बचपन से ही जिज्ञासु थे वे पढाई के साथ–साथ रचनात्मक कार्य करने के लिए प्रेरित किया।

थामस अल्वा एडिसन एक जिज्ञासु और धुनी आविष्कारक, जिन्होनें अपनी युक्तियों को कठोर परिश्रम से साकार रूप दिया। वह बहुआयामी प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने हजार से भी ज्यादा आविष्कार किये। एडिसन मेनलो पार्क, न्यू जर्सी में अपनी प्रयोगशाला का निर्माण किया। मेनलो पार्क में वह अकेले नहीं थे बल्कि अपनी मदद के लिए उन्होंने बहुत से लोगों को रोजगार दे रखा था। अपने कार्मिकों के साथ स्वयं एडिसन के साथ रात–रात भर काम करते थे। एडिसन ने चलचित्र, फोनोग्राफ, टेलीग्राफ, माइक्रोफोन आदि ढेरों वस्तुएँ बनाई। शायद इसलिए उन्हें 'मेनलो पार्क का जादूगर' कहा गया। आइंस्टीन ने उन्हें ''सर्वकालिक महान आविष्कारक'' माना।

राधास्वामी सत्संग भवन के सामने
गली नं. –2, अंबेडकर कॉलोनी
बीकानेर

कहानी

चुनमुन डॉल्फिन

डॉ राकेश चक्र

समुंदर की अनवरत लहरें मानो समुंदर की प्रार्थना बन गई थी। आदिकाल से बनती और बिगड़ती लहरें अदृश्य मंजिल की ओर बढ़ी जा रही थी। ओर न छोर बस कम्पनमय शोर। इसका नीलिया जल सभी समुन्द्री जीवों को खूब भाता। अनगिनत जीव एक–दूसरे का ग्रास बनकर नित्य ही नई सृष्टि की रचना रचते रहते।

रामेश्वरम के समुन्द्री तट पर आज सूर्य की किरणों ने जो सुनहरा प्रकाश बिखेरा उससे समुन्द्री जीव भी मस्ती में झूमने लगे थे। इस तट से लगभग दो किलोमीटर की दूरी पर एक शीप मछली का बच्चा अपनी माँ और अपने परिवार से कुछ देर पहले ही बिछुड़ गया था।

उसका नाम था पप्पी। पप्पी बहुत प्यारी–प्यारी सुंदर –सी थी। उसे अभी ठीक से तैरना भी नहीं आता था। वह बेचारी सोचने लगी कि अब तो मैं अपनी माँ और परिवार के बिना कैसे जी पाऊँगी। मुझे तो कोई बड़ी मछली या कोई भी जीव यूँ ही चट कर जाएगा। मुझे तो फुर्ती से अभी तैरना भी नहीं आता। ऐसे अनेकों नकारात्मक विचार उसके मन–मस्तिष्क में चल ही रहे थे कि तभी उधर से चुनमुन डॉल्फिन का परिवार गुजर रहा था। उस परिवार में चुनमुन के पति और तीन बच्चे साथ थे। सभी बहुत समझदार और दूसरों का उपकार करने वाले थे।

चुनमुन को समझते देर न लगी कि ये शीप का नन्हा बच्चा किसी मुसीबत में फंस गया है। हमें इसकी मदद जरूर करनी चाहिए।

चुनमुन ने कहा, 'बेटा आप बिल्कुल नहीं घबराओ हम सब आपकी मदद करेंगे। आप हिम्मत मत हारना। हमको भगवान ने ही आपकी मदद करने के लिए ही भेजा है। धीरे–धीरे आपके पंख बड़े होते जाएंगे। बेटा आप अपने मम्मी पापा कैसे बिछुड़ गए ?'

इतना सुनना था कि नन्हीं पप्पी रोते हुए बोली, 'मैं आपको क्या बताऊँ, मैं बहुत शरारती हूँ। मैं अपनी माँ की आज्ञा के बिना अकेली ही घूमने लगी कि तभी एक ऐसी तेज लहर आई कि वह मुझे यहाँ लाकर छोड़ गई। मुझे माँ की बहुत याद आ रही है।'

चुनमुन ने उसे चूमकर खूब प्यार किया और अपने गले लगाया और सांत्वना देते हुए समझाया कि बेटा हम सब तुम्हारी माँ से मिलवाते हैं, लेकिन तुम हिम्मत मत हारना। मैं तुम्हें अपनी पीठ पर भी बैठा सकती हूँ, लेकिन तुम स्वयं हिम्मत से तैरती रहना। क्योंकि जो अंदर से कमजोर होते हैं, उनकी मदद ईश्वर कभी नहीं करता। बल्कि ईश्वर उन्हीं की मदद करता है, जो हिम्मत करके अपनी मदद स्वयं करते हैं। डूबते को तिनके का सहारा ही काफी था। पप्पी मन ही मन ईश्वर को बार–बार धन्यवाद देती रही। चुनमुन और उसका परिवार पप्पी के परिवार की खोज में लग गया।

ईश्वर की ऐसी कृपा हुई कि कुछ ही देर में पप्पी का परिवार मिल गया। क्योंकि पप्पी के घरवाले भी उसकी खोज करने में जुटे हुए थे।

पप्पी अपनी माँ को देखते ही गले से लिपट कर प्यार करने लगी। दोनों की आँखों से स्नेह की वर्षा होने लगी।

पप्पी की माँ को समझते देर नहीं लगी कि मेरे बच्ची की मदद चुनमुन डॉल्फिन और उसके परिवार ने ही की है। पप्पी को पाकर पूरा परिवार खुशी से झूम उठा। उसके बहन–भाई पप्पी को पाकर बहुत खुश हो गए।

पप्पी की माँ ने इस अवसर पर चुनमुन के परिवार के लिए बहुत शानदार पार्टी का आयोजन किया। साथ ही ढेर सारे उपहार देकर चुनमुन को विदा किया। चलते समय सबकी आँखें प्रेम का उपहार पाकर सजल हो गईं। उपकार और प्यार की एक नई इबादत लिख गई थी। ईश्वर को सभी मिलकर धन्यवाद दे रहे थे। पुनः मिलन की चाह में चुनमुन डॉल्फिन का परिवार अपनी मंजिल की ओर बढ़ा जा रहा था।

मुरादाबाद, उत्तरप्रदेश।

नाम है आलू

दिल्ली मुंबई कोलकाता
हर जगह दिख जाऊं।
सब्जी वाले के दुकान पर
मैं खूब मुस्काऊं।

मेरा नाम है आलू
जो चाहे बना कर खाओ।
चाट पकौड़ी चिप्स भूजिया
जो चाहे मेरा बनाओ।

मै अमीर–गरीब की
थाली मे दिख जाऊं।
जाति धर्म मजहब का
मैं ना भेद दिखाऊं।

हर सब्जी में मेरा
रहता हर दम नाम।
सबकी भूख मिटाऊं
मेरा है बस काम।

अमेरिका जापान जर्मनी में
मेरा बहुत है नाम।
मगर सभी से मिल कर रहना
मेरा है बस काम।

मुझको पैदा करता है
दुनिया का हर किसान।
इसलिए तो मेरा
दुनिया भर में है नाम।
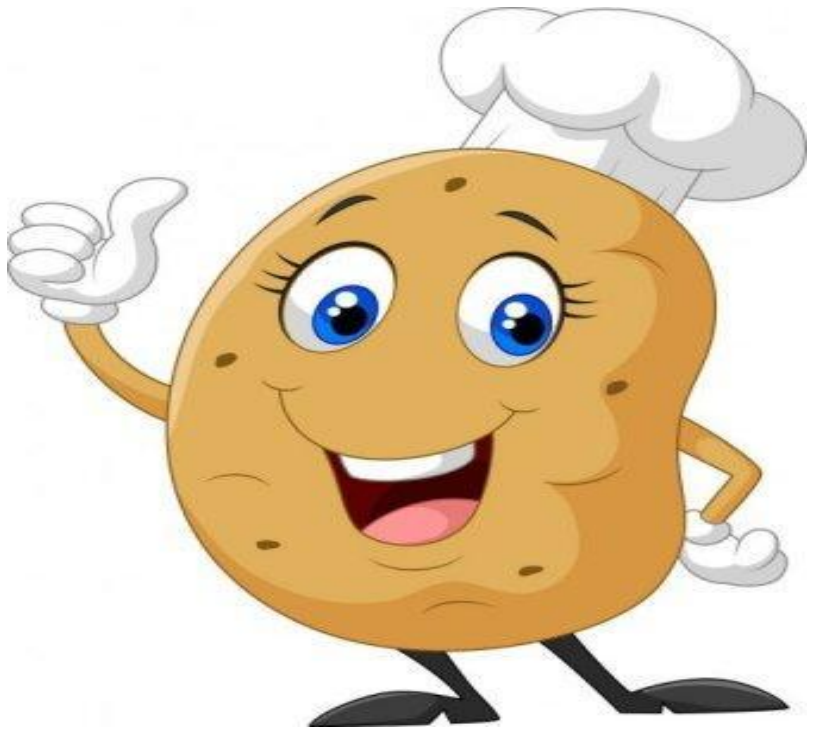
बद्री प्रसाद वर्मा 'अनजान'
गल्ला मंडी, गोरखपुर उ. प्र.

होली का त्यौंहार

युगों युगों से होली ने
अपना रंग जमाया है
अबीर–गुलाल व रंग से
अपनत्व को बढ़ाया है।

जात पांत, वर्ण भेद को
सबने यहां भुलाया है
नहीं जाना ऊँच नीच को
सबको गले लगाया है

इन्द्रधनुषी सप्त रंगों से
खिल उठे हैं चेहरे सारे
भूल गये सभी गम के साये
खुशियों के हुए चौबारे

मानव की क्या कहें बात
प्रकृति का भी खिला गात
सुरभित हैं पुष्प सब ओर
उल्लसित करते हर छोर

तन–मन की गांठें खुली
प्रकृति पुरूष करें ठिठोली
कण–कण में उमंग बसी
सब मिलजुल मनायें होली

मिलकर होली खेलेंगे

चंग–धमाल को सुनाने,
बच्चों की टोली आई।
हवा फागुनी, रूत सुहानी,
बच्चों को भी है भाई।
अब नाचेंगे और गायेंगे,
मिलकर होली खलेंगे।
हंसने लगे, लगे झूमने,
मधुर गीत क्या गाये हैं।
रंग–रंगीला कर देने को,
पिचकारी भर लाये हैं।
आज गगन सब छू लेंगे,
मिलकर होली खेलेंगे।
पीली सरसों, पीले फूल
कह रहे दुख जाओ भूल।
अपने मन से आज निकालो,
भेदभाव, के सारे शूल।
नफरत दूर धकेलेंगे,
मिलकर होली खलेंगे।

डॉ. कृष्णा आचार्य
उस्तों की बारी के अन्दर
बीकानेर।

खेलने आए होली

होली के हुड़दंग में, उड़ता रंग गुलाल
सारे करते मस्तियाँ, सब ही करें धमाल
सब ही करें धमाल, खेलने आए होली
सबके मन में जोश, उमंगित हैं हमजोली
कहें 'धीर' कविराय, नचे हुरियारे टोली
ले के सभी गुलाल, खेलने आए होली।

महेंद्र कुमार वर्मा
गेविंदपुरा, भोपाल, मध्य प्रदेश

सृजन को आकार

प्यारें बच्चों, आपके स्नेह भरे काफी चित्र प्राप्त हुए है। सभी चित्र बहुत ही सुन्दर है। आपने अपनी सृजनशीलता को पेन्सिल एवं रंगों के द्वारा बहुत ही मनमोहक तरीके से उकेरा है। आपका प्यार हमें निरन्तर ऐसे ही मिलता रहेगा।

चारू शाणसुखा, बीकानेर

काव्या दवे, बालोतरा

नारायणी जाट, भीलवाड़ा

कुनिका कौशिक, बीकानेर

महिमा जैन, बीकानेर

राशि दवे, बालोतरा

पूर्णिमा बूचा, बीकानेर

दिव्यांशु पडिहार, बीकानेर

कार्तिक जैन, बीकानेर

ख्याति बक्शी, बीकानेर

तानिया कौशिक, बीकानेर

बाल कहानी

तुम बेमिसाल हो

पूनम पांडे

जापान के मोंजुई गांव मे सूजो ओर खूजो दो भाई थे। सूजो दो साल बडा था और वह बहुत ही गोरा –चिट्टा, सुंदर तथा सजीला था। मगर खूजो उसके जैसा बिलकुल नहीं था वो मोटी नाक मोटे होंठ वाला तथा जरा सा बेडौल भी था और उसके इसी रूप से माँ को भी उसके बारे मे बहुत ही फिक्र होती रहती कि, 'मेरा बेटा कितना भद्दा दिखाई देता है, इसका क्या होगा, यह कैसे अपना जीवन यापन करेगा?' वगैरह वगैरह।

अब मन मे इतनी भयंकर चिंता थी इसलिए घर मे यह बात बार–बार कही जाती थी लेकिन खूजो के विद्यालय मे गुरूजी उसको इतना प्यार करते कि उसका आत्मविश्वास हमेशा ही मजबूत रहा उसको कभी भी हीन भावना ने छोटा और बेकार महसूस नहीं होने दिया।

सूजो तो शुरू से नृत्य का शौकीन था वो पंद्रह का होते–होते अच्छा नर्तक बन गया। अब वो इसी को अपना कैरियर भी बनाना चाहता था। जब खूजो पंद्रह साल का हो गया तो माँ ने उसको प्रकृति के करीब रहकर कविता लिखने की सलाह दी। उसके ही गांव के एक परिचित के पास जाकर वो बगीचे मे समय गुजारने लगा। वहां पर तितली, भंवरे, तोते, पेड़–पौधे, गिलहरी आदि उसको बहुत अच्छे लगे। मगर वो कविता लिखने में खुशी महसूस नहीं कर पाया। उसको हर फूल को गौर से देखने मे बहुत आनंद मिलता था। वो वहां पर फूलों की सजावट सीखने लगा। और तीन साल मे ही इतना पारंगत हो गया कि कैसी भी फूलपत्ती हो उसको अपने तरीके से सजा कर बेहद आकर्षक बना देता । जिनके बगीचे मे खूजो जाया करता था वो भी उसकी इस कला और इसमें निरंतर आ रहे सुधार पर बहुत ही प्रसन्न हो गये। वो फूलों को इतनी कलात्मक सजावट से मोड़ देता कि वो मोर, हंस, बत्तख, मछली आदि से मिलते जुलते दिखाई देते।

एक बार किसी ग्राहक ने वो सजावटी फूल मुंह मांगी कीमत मे खरीद लिये और खुश होकर वाह, वाह, करता हुआ वहां से गया। यह बात पता लगी और बेटे की कमाई देखी तो खूजो की मां बहुत ही प्रसन्न हो गई कि यह तो बहुत ही अच्छा हुआ कोई हुनर तो सीख ही लिया। अब अपना जीवन खुशी खुशी गुजार ही लेगा। खूजो को भी बड़ा अच्छा लगा। उसको ऐसा लगा जैसे उसका तन–मन भी किसी सुंदर से फूल की तरह ही खिल गया है। वो समझ गया कि उसको इन फूलों ने एक नया नाम दिया। आज हर कोई उसकी कला का दीवाना हो गया है वो अब बहुत ही मन लगाकर फूलों, पत्तियों को आकार देना सीखने लगा ।

एक दिन की बात है उसके पिता को गांव से शहर जाना था। कुछ कपड़े थे जो दर्जी को देने थे। खूजो ने माँ के आग्रह पर पिता का साथ दिया और कपड़े का बंडल लेकर दोनों सुबह–सुबह निकल पड़े। लगभग दस किलोमीटर पैदल रास्ता था। मगर, पिता ने जंगल वाला रास्ता लिया। वहां से एक छोटा रास्ता भी शहर को जाता था। दोनों बातें करते हुए जा रहे थे कि दूर से भेडिये की गुर्राहट सुनाई दी। दोनों ठिठक गये और अच्छी तरह समझ भी गये कि यह खूंखार जंगली भेडिया है, जो भूखा भी है आज

अगर सामना हुआ तो दोनों को ही चीर कर रख देगा। दोनों जानते थे कि हमले की आवाज दूर से सुनकर इनके साथी भी भागते हुए आ धमकते हैं।

खूजो बार—बार पास आती आवाज से समझ गया कि यह भूखा जंगली भेडिया दो—तीन मिनट की दूरी पर तो है। उसने पिता से एक झाड़ी की ओट मे आने को कहा और जंगल की घास उखाडकर शीघ्र ही दो हरे खरगोश बना दिये। पिता की मदद से उनको झाड़ी पर इस तरह लगा दिया कि वो हवा से हिलने लगे। अब दोनों पिता पुत्र ओट मे दुबक कर दबे पांव आगे को बढते रहे ।
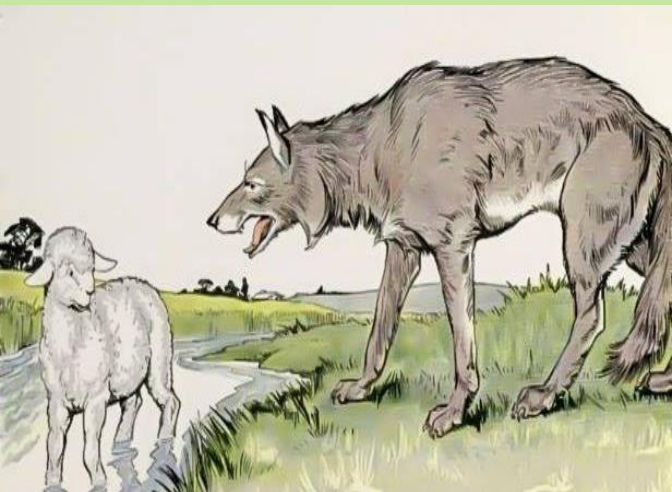
उधर भेडिये ने झाड़ी पर दो हरे खरगोश दूर से ही देख लिये। भूख और लालच मे भेड़िया झाड़ी पर ही झपट गया कि कहीं खरगोश भाग न जाये।

मगर झाड़ी बहुत नुकीली थी और उसमें खूजो ने एक जंगली फली लटका दी थी जिससे अगर स्पर्श मात्र भी हो जाये तो भयंकर खुजली मच जाती है।

धोखे का शिकार भेड़िया जैसे—तैसे झाड़ी से उतर तो गया मगर खुजली करता—करता बेहाल हो गया। वो जमीन पर खुद को तब तक रगडता रहा जब तक थककर बेहोश नहीं हो गया। तब तक खूजो और पिता शहर आराम से पहुंच गये थे। पिता को आज खूजो की बुद्धिमानी पर बहुत ही गर्व हो रहा था। खूजो को उन्होंने मन ही मन बहुत आशीष दिया खूजो उनके चेहरे को आराम से पढ पा रहा था। वो भी मन ही मन बहुत खुश था लौटते समय वो सीधे और लंबे मार्ग से ही घर वापस आये। जब लौटे तो कोई ग्रामीण बताने लगा कि आज जब हम छोटे रास्ते से होकर आ रहे थे तो जंगल मे एक भेडिया देखा वो तो बिलकुल ही पागल होकर जमीन पर लोट रहा था। शायद खुजली वाली जंगली फली उसके बदन को छू गई होगी।

हाँ भई, कम से कम दो दिन लग जाते हैं खुजली मिटने में किसी ने जवाब दिया। खूजो और उसके पिता ने यह किस्सा सुना तो दोनों मुसकुरा दिये। बाद में यह किस्सा माँ और सूजो ने भी सुना। पूरा परिवार खूजो पर गर्व कर रहा था।

अजमेर

मेंढक

मेंढक ऐसा जीव जगत में
टर्र—टर्र टर्राता।

सिर और धड़ होती है इसके
गर्दन से नहीं नाता।

आँखें तिकोने सिर पर होती
चारों ओर दिख जाता।

चार पैर का प्राणी है ये
फुदक—फुदक कर जाता।

जल—थल दोनों में रह लेता
उभयचर कहलाता।

जब भी जल में तैरा करता
पग पतवार बनाता।

कीड़े—मकौड़े छोटी मछलियां
झट से चट कर जाता।

ठंड से बचने की खातिर यह
मिट्टी में घुस जाता।

नर होता मादा से छोटा
सभी जगह मिल जाता।।

दीनदयाल शर्मा
10/22 हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी, हनुमानगढ़

जंगल मे धरना

शुभम पांडेय

बल्लू भागता हुआ आया और वनराज के सामने बेतहाशा हाँफने लगा। वनराज ने अपने चिरपरिचित अंदाज में दहाड़ते हुए कहा, क्या हुआ बल्लू ? इतना तेजी से कहाँ से भागता चला आ रहा है ? कहाँ सुनामी आयी है या फिर जंगल मे किसी ने फिर लड़ाई कर ली। जरूर जाकी (लोमड़ी) ने आग लगाई होगी।

बल्लू का हाँफने अब बंद हो गया था तो उसने कहा, 'हुजूर! समस्या बड़ी विकट है। हमारे जंगल को मनुष्यों की नजर लग गयी वो बड़ी–बड़ी मशीनों से हमारे पेड़ काट रहे हैं। सबके घर तबाह होते जा रहे। कोई उपाय करिये वरना हम सब बेघर हो जाएंगे और जल्द ही मर जायेंगे। पूरा जंगल यही सोच कर परेशान है।' शेर की सभा मे बैठे मंडू मेढ़क, चीकू खरगोश और जम्बू हाथी ने भी चिंताजनक चेहरा बनाते हुए मामले की गम्भीरता को समझा। तभी बूढ़े भालू जो शेर के महामंत्री थे जिन्हें सब सत्तू दादा कहते थे उन्होंने एक सभा बुलाने की राय दी जिस पर अमल करते हुए शेर ने पूरे जंगल की विराट सभा का आयोजन किया। गली–गली खबर फैलाने हेतु डब्बू बाज और जाकी को लगाया गया।

दूसरे दिन विराट सभा बैठी सभी जानवरों ने बारी–बारी अपनी बात रखी जिसे बखूबी सुना गया और सबकी बातें और सलाहों को मद्देनजर रखते हुए वनराज ने कहा, 'तमाम बड़ो और परिवार यानी जंगलवासियों की राय और अपने विवेक के अनुसार मैंने फैसला लिया है कि हम सभी मनुष्यों को डराने और धमकाने के बजाय उनसे अपने जंगल को छोड़ कर जाने के लिए मनाएंगे और धरना देंगे। सभी हमारी बात जरूर मानेंगे और हम तब तक नहीं उठेंगे जब तक वो हमारी बात नहीं मान लेते। हम जंगलवासी अहिंसा के रास्ते पे चलकर अपना घर बचाएंगे।'

सारे जानवरों ने यह बात मानी और दूसरे दिन तड़के सुबह जंगल जाने के रास्ते पर शेर के संग सभी जंगलवासी जानवर और पक्षियों ने धरना शुरू किया। सुबह जब सभी मजदूर और आदमी पेड़ काटने आये तो उन्हें सबसे पहले सभी जानवरों का यूँ बैठा रहना डर का माहौल लगा और सब भाग खड़े हुए।

काफी घण्टो के बाद पूरी वन विभाग की टीम ने कई अथक प्रयास किये लेकिन जानवर हट नही रहे थे और न ही किसी को तकलीफ दे रहे थे। यब दृश्य देखकर सब अचरज में थे कि आखिर जानवर क्या चाहते हैं ? दुनिया के सबसे खूंखार जानवर में से एक शेर, लकड़बग्घे सब यूँ ही शांत और जो एक दूसरे को मार कर खाते आज कैसे यूँ साथ बैठे हैं ? धीरे–धीरे यह खबर शहर तक फैल गयी कि जंगल के जानवर सड़क पर बैठे हैं जिससे सारा काम ठप्प पड़ा।

मीडिया वालों को जैसे ये पता चला सभी चैनल वाले अपने–अपने साजो–सामान के साथ जंगल आ डटे और रिपोर्टिंग शुरू कर दी। लेकिन किसी को समझ नहीं आ रहा की माजरा क्या है ? आखिर यह कैसी स्थिति है ?

तभी अचानक मीठू तोता उड़ता आया और उसने अपने अंदाज में बताया, 'तुम लोग जंगल छोड़ दो। हमें जीने दो वरना हम धरना नहीं छोड़ेंगे।'

इसके बाद सारे जानवर अपनी–अपनी आवाजों में दहाड़ने, चिल्लाने, लगे। मानो वो मिट्ठू के समर्थन में बोल रहे हों।

सभी खड़े लोगो मे त्राहि–त्राहि मच गई और लोग इस बात को समझ नहीं पा रहे थे कि हिंसक जानवर आखिर अहिंसा और धरना कैसे दे रहे ? अगले कुछ दिनों में लोगों का तांता लग गया और सोशल मीडिया में जानवरों की खातिर आवाज बुलंद होने लगी

जिससे सभी कम्पनियों में हड़कंप मचा जिन्होंने जंगल काटने का ठेका लिया था साथ ही सरकार पर सवालिए निशान आये की ऐसे प्रस्ताव को मंजूरी कैसी मिली ?

कई दिनों तक जानवर ऐसे भूखे प्यासे सड़क पर बैठे रहे और कुछ तो वही विकल होकर गिर पड़े लेकिन उन्होंने अपना हौसला और धैर्य नहीं छोड़ा। आखिरकार जनता की बुलन्द आवाज और जानवरों के अहिंसा भरे धरने के नतीजा आया। जंगल को काटने का आदेश वापस लिया गया यह बात स्वयं मंत्री जी ने आकर मिट्ठू को बताई। मिट्ठू तुरन्त उड़ कर टिरर–टिरर करके सारी बात जंगलवासी को समझाई।

सारे जानवरों ने अपनी–अपनी आवाजों में शोर किया जैसे वो धन्यवाद करके अपनी जीत की खुशी मना रहे थे और तभी सारे जानवर अपने–अपने घर को ओर चले गए और सभी आदमी, मीडिया, मशीनें अपने–अपने जगह की ओर गए। अहिंसा बहुत बड़ी कुंजी है जो प्यार और समर्पण की भट्टी से जलकर धैर्यता की चोट से गुजरते हुए हमें सफलता के स्वर्णिम दरवाजे तक ले जाती है।

सत्यदेव पुरम चौराहा
अयोध्या उत्तर प्रदेश

जानकारी

अंगारे जैसे फूलों वाला वृक्ष – सेमल

शिवचरण चौहान

सेमल एक विशाल, सुन्दर लाल चटक फूलों तथा काले फल दलों वाला भारतीय मूल का वृक्ष है। इसकी लम्बी–लम्बी शाखाओं में तथा तने में तीखे, घने कांटे होते हैं। इस कारण इस पेड़ पर चढ़ने से बन्दर, भालू या आदमी डरते हैं। इस विशाल वृक्ष की शाखाएं छितरी होती हैं, इसलिए इसलिए पत्ते आम, बरगद, पीपल, नीम, महुए, जामुन, इमली, डाक की तरह घनी छाया नहीं दे पाते। धूप नीचे तक आती है।

सेमल को संस्कृत में शाल्मली नाम से पुकारा जाता है। औषधीय गुणों तथा हल्के काठ के कारण यह वृक्ष प्राचीनकाल से ही आम लोगों में लोकप्रिय रहा है। सेमल का वानस्पतिक नाम–बायका–सोया है। भारत के अलावा सेमल की कुछ प्रजातिया, अमेरिका तथा अफ्रीका के जंगलों में भी पाई जाती हैं। सेमल, भारतीय उपमहाद्वीप के सूखे, रेतीले क्षेत्रों के कुछ भागों को छोड़कर सारे भारत भर में उगता है। नदियों के तटो, तालाबों के किनारे, बाग–बगीचों, जगलों से लेकर पवर्तीय क्षेत्रों में एक हजार मीटर ऊँचाई तक यह वृक्ष पाया जाता है। यह 50 डिग्री सेन्टीग्रेड जैसी गर्मी तथा तीन डिग्री सेल्सियस तक की सर्दी भी बर्दाश्त कर लेता है। उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, गुजरात, महाराष्ट्र, हिमाचल, पंजाब, हरियाणा तथा राजस्थान में सेमल के वृक्ष पाए जाते हैं। पलाश की ही तरह सेमल के लाल चटक फूल इसे विशिष्टता प्रदान करते हैं।

मध्य फरवरी से अप्रैल तक इसकी कोयले सी काली कलियों में लाल चटक फूल खिलते हैं, तब डालों से पत्ते झर जाते है और दूर से देखने में ऐसा लगता है कि जैसे किसी वृक्ष में अंगारे दहक रहे हों। सेमल की कच्ची कली, काली होती है। बच्चे इसे तोड़कर धूप में सुखा लेते हैं और इसके डंठल की जगह किसी पतली लकड़ी या माचिस की तीली को घुसाकर इसे जमीन पर फिरंगी (फिरकी) की तरह नचाते हैं। लाल फूलों की बड़ी–बड़ी पंखुड़ियां, मांसल व गूदेदार होती हैं। इसको बंदर, हिरन, भालू, तोते आदि पशु–पक्षी बड़े चाव से खाते हैं। हवा चलने पर जब फूल जमीन पर गिरते हैं, तो हिरनों के झुण्ड इनको खाने दौड़ पड़ते हैं। कई आदिवासी कबीले के लोग सेमल के फूल पका कर खाते हैं। फूल कटोरी जैसे काली कली में लाल सुर्ख होते हैं। बीच में रेशे होते हैं। सेमल के फलों को डोड़ा कहते हैं।

कच्चे डोड़े की सब्जी बनाई जाती है। पके फल में रूई भी निकलती है, जो तकियों, गद्दों, रजाई, सीट बेड, सोफे में भरी जाती है। ये रूई बेहद गर्म होती है व कुछ पीले रंग की हलकी होती है। रूई में ही काले बीज छिपे रहते हैं।

जिससे पौधे उगते हैं। पौधशाला तकनीक से भी सेमल के पौधे उगाए जाते है।

सेमल का वृक्ष चालीस–पचास मीटर तक ऊँचा होता है तथा तने की गोलाई (व्यास) चार से छः मीटर से भी अधिक पाई गई है। इसके पत्तों को पशुओं के चारे के रूप में प्रयोग किया जाता है तो सेमल की लकड़ी माचिस, माचिस की तीलिया बनाने, प्लाई वुड, हल्के फर्नीचर बनाने के काम आती है। सेमल का काष्ठ, जल में न सड़ने वाला, कीड़ों से न घुनने वाला तथा हल्का होता है किन्तु आग जल्दी पकड़ लेता है। इसके फलों से निकली रूई लाइफ जैकेट में भरी जाती है।

पके फलों को मीठा फल जानकर हर वर्ष तोतों के झुण्ड सेमल वृक्ष पर आते हैं और फलों को चोच मार–मार कर तोड़ते हैं, किन्तु अन्दर चिकनी स्वादहीन रूई पाकर बहुत निराश होते हैं।

गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरित मानस में इस दृश्य का अच्छा चित्रण किया है। पौराणिक ग्रन्थों, कथाओं व आयुर्वेदिक ग्रन्थों में सेमल का उल्लेख मिलता है। सेमल का गोंद, एक औषधि है, जो त्वचा (चमडी) रोगो तथा पेट के रोगों की औषधि बनाने में प्रयुक्त होता है। सेमल की रूई, बीज, फूल तथा तने की छाल से अनेक आयुर्वेदिक औषधियां बनाई जाती हैं।

मनेथू, सरवन खेड़ा, कानपुर

व्यंग्य चित्र

चाँद मोहम्मद घोसी, नन्हा बाज़ार, मेड़ता सिटी (राज॰)

क्या करें ? क्या ना करें ? : मॉर्निंग वॉक

संजय पुरोहित

हैलो फ्रेण्ड्स। कैसे हैं आप। बड़ी कक्षाओं वाले भैया और दीदी तो जाने लगे स्कूल। छोटों को करना है अभी इंतजार। अब सर्दियों ने बाय–बाय कहना शुरू कर दिया है। गर्मियों ने नॉक–नॉक करना शुरू कर दिया है। गर्मियों में सबसे ज्यादा मज़ा आता है मॉर्निंग वॉक का। चलिए आज आपको बताएं मॉर्निंग वॉक के दौरान क्या करें और क्या ना करें–

क्या करें

मॉर्निंग वॉक की सबसे पहली शर्त है। सुबह जल्दी उठें। फ्रेश होवें और खुद को तैयार करें।

कोशिश करें कि अकेले नहीं जाकर अपने दोस्तों को भी साथ ले जाएं। ये अच्छी आदत जीवन भर साथ निभाती है।

मॉर्निंग वॉक के साथ–साथ थोड़ी दौड़, थोड़ी कसरत और थोड़ा योग भी करना चाहिए। इससे पूरा शरीर ऊर्जा से भर जाता है।

जिस उद्यान में कसरत करते हैं वहां के किसी काम को अपने हाथ में लेकर रोजाना थोड़ा श्रम दान कर सकते हैं। इससे आंतरिक खुशी मिलेगी।

कसरत के बाद घर आते समय घर का कोई काम भी कर सकते हैं जैसे अखबार लाना, दूध लाना या कुछ और भी।

क्या न करें

सुबह देर तक नहीं सोना चाहिए। देर से उठने से पूरा दिन अस्त व्यस्त हो जाता है।

मॉर्निंग वॉक के लिए घर से बहुत दूर स्थित उद्यानों पर नहीं जाना चाहिए। जो नजदीक हो वहीं पर सुबह गुजारनी चाहिए।

आपका शरीर में जितनी कसरत करने की शक्ति हो उससे अधिक कसरत नहीं करनी चाहिए।

उद्यान के पौधों को या उनके फूलों को तोड़ना नहीं चाहिए। प्रकृति का आनन्द उसके दृश्यों में होता है। उसका आनन्द देख कर ही उठाना चाहिए।

कसरत के बाद घर आते ही सीधे नहाना नहीं चाहिए। थोड़ी देर शरीर को सामान्य होने बाद ही नहाना चाहिए।

पता– सूरसागर के पास, बीकानेर

मनोरंजक एवं ज्ञानवर्धक वेबसाइट

सुरेश कुमार पुरोहित

आपका चहल–पहल की रंग–बिरंगी वेब दुनिया में स्वागत है। हम आपको बताने जा रहे है कुछ नई वेबसाइट्स के बारे में जोकि बच्चों को सिखायेगी Learn With Fun Activities. जो बच्चों को नहीं होने देगी बोरियत और थकावट। जिसको बच्चे सींखेंगे लगातार Fun Activity के साथ ।
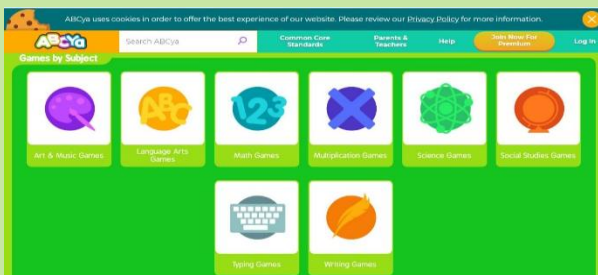
www.abcya.com हमारे बच्चों की website सूची में यह सर्वप्रथम इसलिए है क्योंकि यह वेबसाइट बच्चों को खेल–खेल में गणित, विज्ञान, सामजिकविज्ञान, चित्रकला जैसे कई महत्वपूर्ण विषयों पर पकड़ मजबूत बनाती है अनेक नये तरीकों के साथ तो अभी चैक कीजिए।

www.funbrainjr.com यह website चूंकि नाम में ही फन है ब्रेन है जूनियर है तो आप नाम से ही समझ तो गए होंगे क्या मिलने वाला है। इस website में आपको मिलेगा गेम्स, कहानियां, पजल्स, प्रिन्टेबल ड्राँइंग्स जिन्हें आप प्रिन्टर से प्रिन्ट तो निकाल ही सकते है साथ–साथ उसमें कलर भी कर सकते है तो अभी चैक कीजिए इस फनी वैबसाइट्स को ।
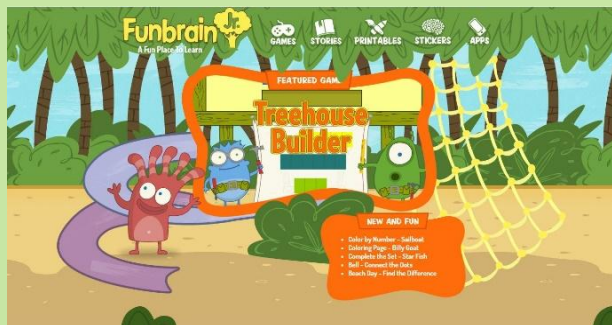
www.pbskids.org नन्हें बच्चों यह वेबसाइट ले जाऐंगी गेम्स और वीडियोज की दुनियां में जहां बच्चें वीडियोज और गेम्स के माध्यम से सीख सकते है कई मजेदार activities तो देर किस बात की अभी जाये और चैक करें ।

www.starfall.com इस वेबवाइट पर बच्चें सीख सकते है कई मजेदार और रोचक गतिविधियां। यहां आपको मिलेगा किंडरगार्टन से लेकर कक्षा 3 तक के बच्चों के सीखने के लिए बहुत कुछ जो आपको मिलेगा बिल्कुल निःशुल्क। आपको किसी भी तरह का कोई भी सब्सक्रिप्शन शुल्क नहीं देना होगा।

बारह गुवाड़ चौक, बीकानेर

एस्ट्रोनॉमी क्लब

संजय श्रीमाली

6 मार्च – बुध ग्रह सूर्य से 27.3 डिग्री की सबसे बड़ी पश्चिमी बढ़ाव पर पहुंचता है। बुध को देखने का यह सबसे अच्छा समय है क्योंकि यह सुबह के आकाश में क्षितिज के ऊपर अपने उच्चतम बिंदु पर होगा। सूर्योदय से ठीक पहले पूर्वी आकाश में ग्रह बहुत नजदीक दिखाई देगा।

13 मार्च – अमावस्या। चंद्रमा सूर्य के रूप में पृथ्वी के एक ही तरफ स्थित होगा और रात के आकाश में दिखाई नहीं देगा। यह चरण 10:23 यूटीसी पर होता है। यह आकाशगंगाओं और तारा समूहों जैसी धुंधली वस्तुओं का निरीक्षण करने के लिए महीने का सबसे अच्छा समय है क्योंकि हस्तक्षेप करने के लिए चांदनी नहीं है।

20 मार्च – मार्च विषुव। मार्च विषुव 09:27 यूटीसी पर होता है। सूर्य सीधे भूमध्य रेखा पर चमकता है और दुनिया भर में दिन और रात के लगभग बराबर मात्रा में होगा। यह उत्तरी गोलार्ध में वसंत का पहला दिन भी है और दक्षिणी गोलार्ध में पतझड़ (शरदकालीन विषुव) का पहला दिन है।

28 मार्च – पूर्णिमा। चंद्रमा सूर्य के रूप में पृथ्वी के विपरीत दिशा में स्थित होगा और उसका चेहरा पूरी तरह से रोशन होगा। यह चरण 18:49 यूटीसी पर होता है। इस पूर्णिमा को शुरुआती मूल अमेरिकी जनजातियों द्वारा कृमि चंद्रमा के रूप में जाना जाता था क्योंकि यह वर्ष का समय था जब जमीन नरम होने लगेगी और केंचुए फिर से प्रकट होंगे। इस चंद्रमा को क्रो मून, क्रस्ट मून, सैप मून और लेंटेन मून के नाम से भी जाना जाता है।

आकाश में ग्रहों की स्थिति (14 मार्च 2021, रविवार)

ग्रह	उदय	अस्त	मध्याहन	स्थिति
बुध	5:22	16:27	10:54	दुर्बल
शुक्र	6:29	18:13	12:21	दुर्बल
मंगल	10:12	00:02(सोम)	17:07	अच्छी
गुरू	4:54	15:48	10:21	सर्वोत्तम
शनि	4:42	15:03	09:42	अच्छी
यूरेनस	08:43	21:48	15:15	दुर्बल
नेपच्यून	6:28	18:11	12:20	दुर्बल
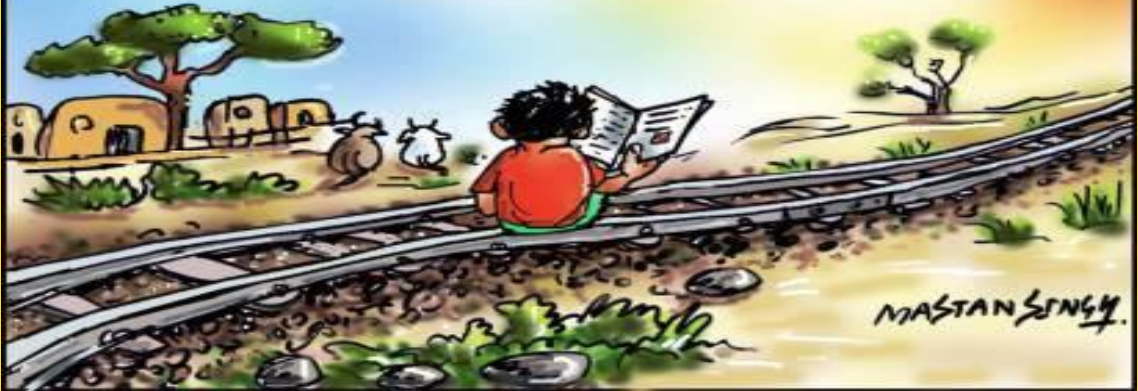
हमारा पता – अजित फाउण्डेशन

आचार्यों की ढाल, सेवगों की गली, बीकानेर। मो. 9509867586

अपनी रचनाएं ईमेल पर ही भेजे –

chahalpahalnew@gmail.com